PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

अगस्त 2007 ISSUE 0807 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

ख्रीस्तानों की मध्यस्थ, सहायिका व सह-संरक्षिका - माँ मरियम द्वारा हम प्रभु येशु तक पहुँचें!

इस महीने 15 तारीख को जब सारे भारतवासी एक तरफ अपनी आज़ादी की 60वीं वर्षगांठ धूम –धाम से मना रहे हैं तो दूसरी तरफ सारी कलीसिया इसी दिन माता मरियम, प्रभु येशु की माँ, के स्वर्ग–उद्ग्रहण का अनिवार्य पर्व भी हर्षोल्लास के साथ मनाती है। इस दिन उन्हें शरीर और आत्मा सहित महिमा के साथ स्वर्ग में आरोहित कर लिया गया था और इस तरह यह घटना हमारे लिए सन्तों के स्वर्ग–उद्ग्रहण का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इससे पहले उनके प्रिय पुत्र प्रभु येशु के मरणोपरान्त उनके पुनरुत्थान, (प्रेरितों व अन्य शिष्यों को) उनके महिमान्वित रूप के दर्शन (1 कुरिन्थियों15:3-7) और उनके स्वर्गारोहण से हमें, जो उन्हें अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार कर उन पर विश्वास करते हैं, भविष्य में हमें प्राप्त होने वाली महिमा व पुनरुत्थान की असंदिग्ध आशा बँधाती है। इसी तथ्य पर हमारा विश्वास टिका है क्योंकि यह हमारे विश्वास की नींव है, हमारे धर्मप्रचार का आधार है। इसके बगैर प्रभु येशु पर हमारा विश्वास व्यर्थ है तथा हम अब तक अपने पापों में ही फँसे हुए हैं और हमारी परिस्थिति सभी मनुष्यों में सबसे अधिक दयनीय होगी। प्रभु येशु ने अपने जीवन काल में अपने विश्वासियों को जो प्रतिज्ञा दी थी, **"पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ। जो मुझ में विश्वास करता है, वह मरने पर भी जीवित रहेगा और जो मुझ में विश्वास करते हुए जीता है, वह कभी नहीं मरेगा"**, उसकी पुष्टि तथा म तकों के पुनरुत्थान की पुष्टि प्रभु येशु के पुनरुत्थान द्वारा स्वंय ही हो जाती है।**(सन्त योहन 11:25-26)** इस तथ्य पर विश्वास करके ही हम धार्मिक माने जायेंगे**(रोमियों 4:24-25)** तथा ईश्वरीय महिमा के भागी बनने की आशा रख सकेंगे।

प्रभु येशु पर विश्वास करने से ही हमें मुक्ति मिल सकती है क्योंकि वह सभी के पापों का बोझ अपने कन्धों पर लेकर क्रूस ढ़ोते हुए कलवरी पर्वत पर चढ़े, अपने बहुमूल्य रक्त की अन्तिम बूँद तक उन्होंने हमारे लिए बहा कर हमारे पापों का प्रायश्चित किया, हमारा मेल ईश्वर से करा दिया, हमारे लिए स्वर्ग का द्वार खोल दिया और सभी को संहिता व पाप की अधीनता से मुक्त कराके विश्वास व कृपा के अधीन बना दिया। संहिता, नियमों व आज्ञाओं के पालन द्वारा जो मुक्ति प्राप्त करनी असंभव हो गई थी, वह अब प्रभु येशु पर विश्वास करने से संभव हो गई। **(रोमियों 3;4:24-25;5-7)** यह हम सभी के लिए आनन्द का विषय है क्योंकि अब कोई भेदभाव नहीं रहा है– सभी ने पाप किया और सभी अधर्मी ठहरे, और सभी को मुफ्त में प्रभु येशु पर विश्वास द्वारा पापमुक्ति का वरदान मिला है।

आज प्रभु येशु हमारे बीच विद्यमान हैं, जीवित हैं, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण यह हैं कि वह

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)

'पवित्र बाइबिल'- परमेश्वर के मुक्ति-विधान का इतिहास

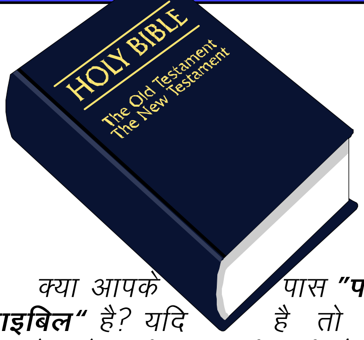

क्या आपके पास **"पवित्र बाइबिल"** है? यदि है तो क्या आपने इसे अभी तक पूरी पढ़ी है और क्या आप इसे रोज़ पढ़ते हैं? यदि पढ़ते हैं, तो क्या आप प्रत्येक वाक्यांश और वचनों के छिपे अर्थ को समझते हैं ?

"पवित्र बाइबिल" में ईश्वर के जीवन्त वचन हैं, वह **ईश वचन का संग्रह** है। चाहे **"पवित्र बाइबिल"** में लिखे ग्रन्थों (73 ग्रन्थ) के लेखक सदियों पुराने थे और सभी लिखने वाले साधारण मनुष्य थे, पर ईश्वर ने उन्हें चुना और ईश्वर की पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर ही उन्होंने इन ग्रन्थों की रचना की। इसलिए पवित्र आत्मा की प्रेरणा द्वारा रचित ग्रन्थों का सही अर्थ पवित्र आत्मा की क पा द्वारा ही समझ आ सकता है। और उसके लिए हमें स्वंय को मानसिक तथा आध्यात्मिक रुप से तैयार करना है। पवित्र बाइबिल मानव जाति की स ष्टि से लेकर अन्तिम दिन तक के उद्धार व मुक्ति के इतिहास का उल्लेख करती है। वह ईश्वर के मुक्ति–विधान के छिपे रहस्यों का खुलासा करता है।

यदि आपके पास पवित्र बाइबिल नहीं है तो आप जल्द ही खरीद लें, और इसे रोज़ अवश्य ध्यान लगा कर पढ़ें। सन्त पौलुस यह लिखते हैं–

"पूरा धर्मग्रन्थ ईश्वर की प्रेरणा से लिखा गया है। वह शिक्षा देने के लिए, भ्रान्त धारणाओं का खण्डन करने के लिए, जीवन के सुधार के लिए और सदाचरण

(शेष भाग प ष्ठ 2 पर)

नथानाएल ने येशु से कहा, "गुरूवर! आप ईश्वर के पुत्र हैं, आप इस्राएल के राजा हैं।"(योहन 1:49)

(प ष्ठ 1 का शेष भाग)☛
का प्रशिक्षण देने के लिए उपयोगी है, जिससे ईश्वर-भक्त सुयोग्य और हर प्रकार के सत्कार्य के लिए उपयुक्त बन जाये।" (2 तिमथी 3:16-17)

"पवित्र-बाइबिल" कैसे पढ़ें

यदि आप इसे पहली बार पढ़ रहे हैं तो आप पवित्र बाइबिल के "नये नियम" को पहले ध्यान से पढ़ें। पढ़ने की एक प्रचलित विधि इस प्रकार है–

★ पहले **सन्त योहन** के सुसमाचार को पढ़ें। उसे दूसरी बार भी पढ़ें और इस बार आप चाहें तो प्रभु के वचनों को या सिर्फ मुख्य शब्दों को रेखांकित कर सकते हैं। फिर तीसरी बार और ध्यान से पढ़ें। प्रतिदिन कम से कम **3** अध्याय अवश्य पढ़ लें।

★ इसके बाद **सन्त मत्ती** के सुसमाचार से लेकर **प्रकाशना-ग्रन्थ** तक के सभी पुस्तकों को क्रमानुसार पढ़ें। प्रतिदिन कम से कम **4** अध्याय पढ़ने के बाद उन के सार को समझने की कोशिश करें और मुख्य बातों और विषयों पर ध्यान दें।

★ अन्त में **"पुराना नियम"** के ग्रन्थों को शुरु से अन्त तक पढ़कर **"नया नियम"** पढ़ें। पुराने नियम में **5** से भी अधिक अध्याय प्रतिदिन पढ़ने की चेष्टा करें और पिछले दिन पढ़े अध्याय को अगले दिन जारी रखें जिससे बीच में कोई रुकावट न आये और समझने में आसानी हो। हमें चाहिए कि हमें "पवित्र–बाइबिल" के सभी ग्रन्थों की समझ हो, प्रत्येक रूप से "नये नियम" की पुस्तकों की जिसमें मुख्य चार सुसमाचार–**मत्ती** रचित, **मारकुस** रचित, **लूकस** रचित, और **योहन** रचित सुसमाचार सर्वप्रथम आते हैं। यह प्रभु येशु के जीवन, उनके द्वारा किये सभी अदभुत कार्यों, उनकी शिक्षाओं और उनके मरण और पुनरुत्थान के विषयों को भिन्न–भिन्न द ष्टिकोण से दर्शाते हैं। इसके बाद "नया–नियम" में **प्रेरित-चरित** (सर्वप्रथम ख्रीस्त विश्वासियों का इतिहास और जीवन), इक्कीस प्रेरिताई **पत्र** और **प्रकाशना-ग्रन्थ** है। पर यही काफी नहीं।

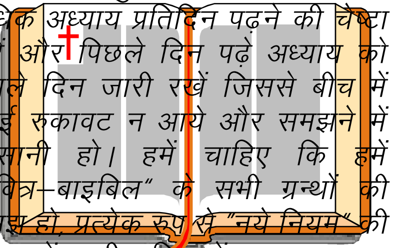

एक या दो बार पढ़ने से हमें बाइबिल पढ़नी छोड़नी नहीं है। पर उसे रोज़ मन की एकाग्रता व विनम्रता के साथ पढ़ना चाहिए। हम प्रभु से यह कृपा माँगें कि हम इस पवित्र पुस्तक के सिद्धान्तों को समझ कर उन्हें अपना सकें और इसके वचनों पर चल सकें। आमेन।

याद रखें कि ईशवचन में ही जीवन है, शान्ति, शक्ति, ज्ञान व ईश्वर का प्रेम है।

(प ष्ठ 1 का शेष भाग)

हमारी प्रार्थनाओं का जवाब देते हैं, हमारे बीच "जीवन–धाम" में अनेक चमत्कार दिखलाते तथा हज़ारों विश्वासियों को अपने, ईश्वर व पवित्र आत्मा के दर्शन दिलवाते हैं, अपने शक्तिशाली वचनों को स्थापित करते व उसके द्वारा हज़ारों को रोगों से मुक्ति देते हैं, आध्यात्मिक शक्ति व ज्ञान देते, शान्ति, प्रेम व आनन्द देते हैं। यदि आप ने स्वंय ऐसे कोई अद्भुत कार्य देखे हैं व सुने हैं, तो स्वंय को धन्य समझिए। (**स्तोत्र 94:12; मत्ती 13:16-17**) और यदि आप को प्रार्थना के द्वारा ऐसे कोई अनुभव मिले हैं, तो उनकी गवाही दूसरों को ज़रूर देकर प्रभु पर अपना द ढ़ विश्वास प्रकट कीजिए या अपनी गवाही हमें पत्र द्वारा लिख भेजिए।

अब प्रभु येशु पिता परमेश्वर के दाहिने विराजमान हैं।(**प्रेरित-चरित 2:33**) वह हमारे और ईश्वर के बीच मध्यस्थ बने हुए हैं और हमारे लिए अब भी पिता से प्रार्थना करते रहते हैं।(**रोमियों 8:34**) वह दूसरी बार प्रकट हो जायेंगे– पाप के कारण नहीं, बल्कि उन लोगों को मुक्ति दिलाने के लिए जो उनकी प्रतीक्षा करते हैं।(**इब्रानियों 9:28**) ईश्वर ने अपनी योजना के अनुसार ही अपने प्रिय पुत्र येशु को पहली बार सारे संसार के उद्धार के लिए एक स्त्री के ज़रिये इस धरती पर जन्म लेने दिया और बाद में सारी मानव जाति के लिए उसे अपने जीवन की कुर्बानी देने के लिए समर्पित कर दिया। पर उसी योजना के अन्तर्गत ईश्वर ने अपने सामर्थ्य से उसे तीसरे दिन म तकों में से सर्वप्रथम पुनर्जीवित किया। इस तरह हम यह जान गये कि म तकों का भी पुनरूत्थान होता है। इस बात को समझाने के लिए सन्त पौलुस अपने पत्र में यह लिखते हैं, " **किन्तु मसीह सचमुच म तकों में से जी उठे। जो लोग म त्यु में सो गये हैं, उनमें वह सबसे पहले जी उठे। चूँकि म त्यु मनुष्य(आदि माता-पिता हेवा और आदम के पाप अर्थात् आदि पाप के कारण) द्वारा आई थी, इसलिए मनुष्य (येशु) द्वारा ही म तकों का पुनरूत्थान हुआ है। जिस तरह सब मनुष्य आदम (से सम्बन्ध) के कारण मरते हैं, उसी तरह सब मसीह (से सम्बन्ध) के कारण पुनर्जीवित किये जायेंगे-सब अपने क्रम के अनुसार, सबसे पहले मसीह और बाद में उनके पुनरागमन के समय वे, जो मसीह के बन गये हैं।"** (**1 कुरिन्थियों 15:20-23**)

और मसीह से सब से अधिक और सबसे पहले जुडने वाली और कोई नहीं, पर पवित्र कुँवारी मरियम है जिन्होंने स्वर्गदूत गब्रिएल के संदेश को सुनकर उसे ठुकराया नहीं, पर उसे ईश्वर की इच्छा मानकर विनम्रता से (**"मैं प्रभु की दासी हूँ। आपका कथन मुझमें पूरा हो जाये।"**) उसकी मंजूरी दी कि वह प्रभु येशु, सर्वोच्च प्रभु के पुत्र, को अपने गर्भ में धारण करेंगी और उसे जन्म देकर इस संसार को एक मुक्तिदाता, एक मसीहा, प्रदान करेंगी। (**सन्त लूकस 1:26-38**) पिता परमेश्वर ने करोडों में से एक मरियम को ही, उनके आत्मा के सौन्दर्य व स्वच्छता के कारण, उनके निष्पाप जीवन व ईश्वर पर द ढ़ विश्वास के कारण, प्रभु की माँ बनने के लिए चुना। भला एक माँ के सम्बन्ध से पवित्र और श्रेष्ठ क्या सम्बन्ध हो सकता है? इसलिए माँ मरियम का स्वर्ग–उद्ग्रहण हुआ क्योंकि उनका जीवन प्रारम्भ से ही ईश्वर को समर्पित था।

उनका जन्म भी प्रभु येशु के जन्म की तरह पिता परमेश्वर के इच्छानुसार पवित्र आत्मा के सामर्थ्य से आदि–पाप रहित और पूर्णतः निष्कलंक था। ऐसा जन्म अब तक और किसी का नहीं हुआ है क्योंकि प्रत्येक बच्चा जब इस धरती पर जन्म लेता है तो वह आदि–पाप के साथ पैदा होता है। वह अपनी माँ अन्ना की एकलौती सन्तान थी। उन्हें बचपन में ही मन्दिर में ईश्वर को समर्पित कर दिया गया था। माँ मरियम इस पापमय संसार में रहकर भी, ईश्वर की कृपा से, कभी किसी प्रलोभन नहीं पड़ी और न ही कभी कोई पाप ही किया। उन्होंने एक आज्ञाकारी व विनम्र दासी/पुत्री का, एक सच्चे शिष्या का जो पूर्ण रूप से ईश्वर पर भरोसा रखकर उनके वचन पर चलती है और एक आदर्श माँ का पात्र बखूबी निभाया। वह **पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा** से, तीनों से जुड़ी थीं– पिता परमेश्वर से एक ईश्वर की पुत्री/दासी के रूप में, पुत्र येशु से एक ऐसी आदर्श माँ के रूप में जो उनका साथ देने के लिए हमेशा तैयार रही, और पवित्र आत्मा की महिमामयी वधू के रूप में। प्रभु येशु ने क्रूस पर मरते समय जब उन्हें अपने प्रिय शिष्य योहन की माँ बनाया, तब उन्होंने उसे अपने पुत्र के रूप में स्वीकार कर लिया और तब से उसके साथ रहने लगी। न केवल प्रभु येशु के जीवन–काल में वह उनकी योजना में सहायक व ईश्वर–विश्वासी सेविका रहीं, पर उनके मरणोपरान्त भी वह अपने विश्वास में द ढ़ रहीं और पवित्र आत्मा से पूर्ण होकर वह येशु के शिष्यों के लिए अपने जीवन के अन्त तक प्रेरणा, ज्ञान–विवेचन, धैर्य, प्रार्थना, प्रेम, आनन्द, विश्वास और आशा इत्यादि का स्त्रोत बनी रहीं। माँ मरियम के मरणोपरान्त स्वर्गदूतों ने उनकी आत्मा को धन्य कहते हुए शरीर सहित ऊपर स्वर्ग में उठा लिया। और तब से आज तक वह हमारे लिए, क्योंकि हम सब उनके दुःखी और लाचार बच्चे हैं जो इस संसार में निरन्तर कराहते रहते हैं, स्वर्ग में

(शेष भाग प ष्ठ 3 पर)

प्रार्थना करते समय येशु के मुखमण्डल का रूपान्तरण हो गया और उनके वस्त्र उज्जवल हो कर जगमगा उठे। दो पुरूष उनके साथ बातचीत कर रहे थे। वे मूसा और एलियस थे, जो महिमा-सहित प्रकट हो कर येरूसालेम में होने वाली उनकी म त्यु के विषय में बातें कर रहे थे।"(लूकस 9:29-31)

(पृष्ठ 2 का शेष भाग)

अपने प्रिय पुत्र से याचना व मध्यस्थ प्रार्थना करती आ रही हैं। वह बढ़ते मानव जाति के पाप व बुराई को देख कर आज भी विलाप कर रही व सभी को पश्चाताप का आहवान दे रही है। वह ईश्वर जन की माँ, बिचवई, अधिवक्ता और सह–संरक्षिका के रूप में अपना पात्र अदा कर रही है। वह हमारी आध्यात्मिक माँ है जो हमें अपने पुत्र येशु तक ले जा सकती है, स्वर्ग का द्वार है जिसके द्वारा हम अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे, और उसके लिए वह हमारा मार्गदर्शन, संचालन, संरक्षण और सहायता करने को तैयार है यदि हम उनसे मदद व मध्यस्थता की अपेक्षा करें।

स्वर्ग में पहुँच कर उनके पुत्र ने ही उन्हें ***"स्वर्ग और पृथ्वी की रानी"*** का मुकुट पहना दिया और इस पर्व को अर्थात् ***"धन्य कुँवारी मरियम, विश्व की महारानी"*** का पर्व सभी विश्वासीगण 22 अगस्त को मनाते हैं। इस अनमोल मुकुट की वह सच्ची हकदार हैं क्योंकि वह हमारे प्रभु, जो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं और जो अनादि और अनन्त ईश्वर हैं और जो सारी सृष्टि के रचयिता हैं, की माँ बनीं और बाद में उनके द्वारा हम सबकी माँ भी बन गई। वह शुरू से अन्त तक गरीबी में अपना जीवन व्यतीत कर अनेक कष्ट और दुःख झेलकर भी ईश्वर की इच्छापूर्ति करने से पीछे नहीं हटी, वह आज्ञाकारी, विनम्र, ईमानदार व परिश्रमी बनी रही और हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत कर गई। यदि हम उनके इन सद्‌गुणों को अपनाएँ और जीवन भर उनका पालन करें तो हमें भी स्वर्ग में प्रभु एक सुन्दर–सा मुकुट पहनाएँगे, क्योंकि प्रभु हमें यह प्रतिज्ञा देते हैं– ***"तुम मृत्यु तक ईमानदार बने रहो और मैं तुम्हें जीवन का मुकुट प्रदान करूँगा।" (प्रकाशना-ग्रन्थ 2:10)*** इसलिए उन्हें "आदर योग्य कुँवारी" तथा "ईमानदार कुँवारी" कहकर पवित्र–माला विनती की स्तुति विनती में सम्बोधित करते व उनसे याचना करते हैं। यही नहीं, वह "स्तुति योग्य कुँवारी" भी है जिन्हें स्वर्गदूत ने **प्रणाम** किया और उनके कुटुम्बिनी एलीज़बेथ ने पवित्र आत्मा से पूर्ण होकर दो बार उन्हें धन्य कहा था।**(सन्त लूकस 1:28, 42, 45)** बाद में स्वयं माँ मरियम भी ईश्वर का गुणगान करते हुए ***(सन्त लूकस 1:46-55)*** एक भजन गाती हैं, ***"अब से सब पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी; क्योंकि सर्वशक्तिमान् ने मेरे लिए महान् कार्य किये हैं।"(सन्त लूकस 1:48-49)*** और यह महान् कार्य यह है कि ईश्वर ने उन जैसी दीन दासी पर कृपादृष्टि कर उन्हें मुक्तिदाता येशु, ईश्वर के इकलौते पुत्र, की माँ बनने का सौभाग्य दिया।

वह कलवरी पर्वत पर हमारी माँ भी बनी और मरणोपरान्त ***'विश्व की महारानी'*** की उपाधि से विभूषित की गई। माँ मरियम को महारानी के महिमामयी रूप में देखने का सौभाग्य परमेश्वर ने सन्त योहन को दिया, जिसके विषय में उन्होंने अपने प्रकाशना–ग्रन्थ में विवरण दिया है। उन्होंने यह दृश्य देखा– **"आकाश में एक महान् चिन्ह दिखाई दिया: सूर्य का वस्त्र ओढ़े एक महिला दिखाई पड़ी। उसके पैरों तले चन्द्रमा था और उसके सिर पर बारह नक्षत्रों का मुकुट।"(प्रकाशना-ग्रन्थ 12:1)** फिर सन्त योहन शैतान को एक विशाल सर्प के रूप में देखते हैं जो महिला और उसके शिशु को निगल जाना चाहता था पर ईश्वर उन्हें बचा लेते हैं। स्वर्गदूत मिखाएल के साथ शैतान(इबलीस) का युद्ध छिड़ा, पर शैतान परास्त हुआ और पृथ्वी पर पटक दिया गया जिसके कारण धरती पर रहने वालों को शैतान का प्रतिदिन सामना करना पड़ेगा। वह ईश्वर विश्वासियों को बहकायेगा, प्रलोभन देगा, परीक्षाएँ लेगा जिससे वे पाप में गिर जायें और ईश्वर के कोप के भाजन बनें, अन्ततः अपनी आत्मा नष्ट कर बैठें। पर वे **मेमने** (ईश्वर के पुत्र येशु) **के रक्त** तथा **अपने साक्ष्य** द्वारा शैतान पर विजय पायेंगे। और यह कृपा माँ मरियम ही हमें अपने प्रिय पुत्र से दिला सकती है। वह "जीवन–धाम" की **रानी एवं सरक्षिका** है, जो अपने भक्तों पर वरदानों की वर्षा करती है।

इसलिए हम प्रतिदिन बिना भूले व्यक्तिगत व पारिवारिक प्रार्थना में **पवित्र माला विनती** करें(उसे अपनी दिनचर्या में शामिल कर लें), उस माँ के साथ प्रभु येशु के जीवन के रहस्यों पर मनन–चिन्तन करें, जिससे हमें माँ मरियम का अनोखा व शक्तिशाली संरक्षण मिले, उनके आँचल में आश्रय मिले, उनकी मध्यस्थता व सहायता मिले। कृपाओं के भण्डार, दया व ममता का सागर उस धन्य कुँवारी माँ से हम प्रार्थना करने में कभी न चूकें। सन्त डॉन बोस्को के इन शब्दों को हम याद रखें, **"हमें इतना प्यार करने वाली तथा हम पर अनुग्रहों की वर्षा करने वाली उस माँ को भला हम कैसे भूल सकते हैं?"**

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

उसके शक्तिशाली वचनों ने मुझे सभी नशीली वस्तुओं के सेवन से मुक्त कर दिया!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा।

मैं, नन्द किशोर(उम्र–48 वर्ष), पिछले **30** सालों से शराब पीता था जो मेरी कभी न छूटने वाली आदत बन गई थी। जो मैंने दोस्तों के साथ घुल–मिल कर पीना शुरू किया था, वह अब अकेले भी, कहीं भी और कभी भी, यहाँ तक कि फैक्ट्री में काम करते समय भी पीने लगा था। काम अच्छा करने के कारण मुझे फैक्ट्री का मालिक भी कुछ नहीं कहता था। साथ ही मैं धतूरा, चरस, गाँजा इत्यादि नशीली वस्तुओं का भी सेवन करने लगा। कम से कम चार लाख रूपए तक शराब इत्यादि के सेवन में मैंने अब तक लगा दिये। मेरी पत्नी व बेटी ने मुझे इन सबसे छुटकारा दिलाने की बहुत कोशिश की पर नाकामयाब रहे।

पिछले एक साल से मेरी पत्नी व बेटी यहाँ "जीवन–धाम" में आ रहे हैं। शुरू में उन्होंने मुझे यहाँ आने को कहा था, पर मैंने साफ मना कर दिया। वे मेरे लिए प्रभु येशु से प्रार्थना करते रहे। फिर पिछले महीने मैं यहाँ एक इतवार प्रार्थना में शामिल हो गया। अगले दिन शाम को छुट्टी के बाद घर आते समय प्रभु की दया से मुझे शराब से घिन्न आने लगी और उस दिन से इन सभी नशीली वस्तुओं का सेवन करना बिल्कुल ही बन्द कर दिया। प्रभु के शक्तिशाली वचनों ने बुरी आदतों की दासता से मुझे मुक्त कर दिया है। प्रभु येशु ने मुझे एक नया जीवन दिया है, मुझे चंगा करके स्वतन्त्र कर दिया है। साथ ही पिछले कुछ महीनों से मुझे सांस लेने में तकलीफ होती थी। एक डॉक्टर ने टी. बी. की बीमारी बताई। यह सुनकर मैं डर गया। पर दूसरे डॉक्टर ने यह कहा कि ऐसी बात नहीं है। यह परेशानी अधिक शराब पीने के कारण हुई है। प्रभु की कृपा से अब मुझे सांस लेने में कोई तकलीफ नहीं है। **नन्द किशोर, फरीदाबाद**

"प्रभु! तूने मेरे बन्धन खोल दिये...मैं प्रभु का नाम लेते हुए धन्यवाद का बलिदान चढ़ाऊँगा।" (स्तोत्र 116:16-17)

पवित्र आत्मा के ज्ञान द्वारा मुझ अनपढ़ को हिन्दी पढ़ने की कृपा मिली! मुझे उसने 'नया जीवन' पढ़ना सिखाया!

...क्योंकि हेरोद योहन को धर्मात्मा और सन्त जान कर उस पर श्रद्धा रखता और उसकी रक्षा करता था। हेरोद उसके उपदेश सुन कर बड़े असमंजस में पड़ जाता था। फिर भी, वह उसकी बातें सुनना पसन्द करता था।" (मारकुस 6:20)

प्रार्थना के दौरान इन लोगों को प्रभु की कृपा से बिना सहारे के चलने की शक्ति मिली, पैरों के दर्द से मुक्ति मिली!

"प्रभु ने मेरे पैर चट्टान पर टिका कर मुझे द ढ़ कदमों से आगे बढ़ने दिया।"(स्तोत्र-ग्रन्थ 40:3)

★ बाइबिल प्रतियोगिता ★

8) प्रेरित - चरित
a) अध्याय 1-3

सन्त लूकस द्वारा रचित इस ग्रन्थ में प्रभु येशु के जी उठने के बाद, उनके शिष्यों पर पवित्र आत्मा के उतरने पर उसकी शक्ति व कृपा द्वारा येरूसालेम से लेकर सारी यहूदिया, समारिया और रोम तक के राज्यों में, प्रेरितों व अन्य शिष्यों ने जो साक्ष्य दिये व उनके द्वारा प्रभु ने जो अद्भुत चमत्कार किये, रोगों से चंगाईयाँ दीं उनका वर्णन किया गया है। मुख्य रूप से हमें यहाँ प्रथम कलीसिया के विकास व प्रभाव का संक्षिप्त इतिहास पढ़ने को मिलता है। इस ग्रन्थ के प्रथम तीन अध्यायों(अध्याय **1 से 3** तक) से लिये गये प्रस्तुत वाक्यों में रिक्त स्थान भरें, उनकी वाक्यांश संख्या अध्याय सहित बतायें तथा उत्तर में यह भी लिखें कि ये वाक्य किसने कहे या ये भविष्यवाणियाँ/प्रतिज्ञाँए किसने कीं?

1) तुम्हारी______द्वारा प थ्वी भर के___ _______प्राप्त करेंगे।

2) वह ______लोगों में एक और ______में_________था।

3) क्योंकि तू मेरी______को _______ में नहीं छोड़ेगा, तू अपने_____ को____ में गलने नहीं देगा।

4)________ _____ का बपतिस्मा देता था, परन्तु थोड़े ही दिनों बाद____ लोगों को पवित्र_______ का बपतिस्मा दिया जायेगा।

5) "मेरे पास न तो____ है और न_____; बल्कि मेरे पास_____है, वही तुम्हें देता हूँ–येशु मसीह_______के नाम पर____।

6) "_______! आप_____ _______की ओर क्यों_______रहते हैं?"

7) मैं ऊपर______में चमत्कार दिखाऊँगा और नीचे______पर_____प्रकट करूँगा, अर्थात्______,अग्नि और उड़ता हुआ____।

8) प्रभु–ईश्वर तुम्हारे______में से______ लिए ___–जैसा एक____ उत्पन्न करेगा।

पिछली प्रतियोगिता के सही उत्तर

7) योहन रचित सुसमाचार
g) अध्याय 19-21

1) घ) (19:30)
2) ख) और ग)(19:7,12)
3) क)(20:11-24)
4) क), ग) और घ)(19:19-20)
5) क)(21:2, 7, 11)
6) ख) और घ)(19:23-24)
7) क), ख), ग) और घ)(19:39-40;20:6-7)
8) ख) और घ)(19:36-37)

मिस्सा बलिदान का समय:

मकान न०.696/सैक्टर-22 फरीदाबाद में
हर इतवार - शाम 6:30 बजे
प्रतिदिन - प्रातः 10:30 बजे मिस्सा बलिदान चढ़ाया जाता है। यहाँ पर 24 घण्टे आराधना होती है। आप भी हमारे साथ प्रार्थना में शामिल हो सकते हैं।

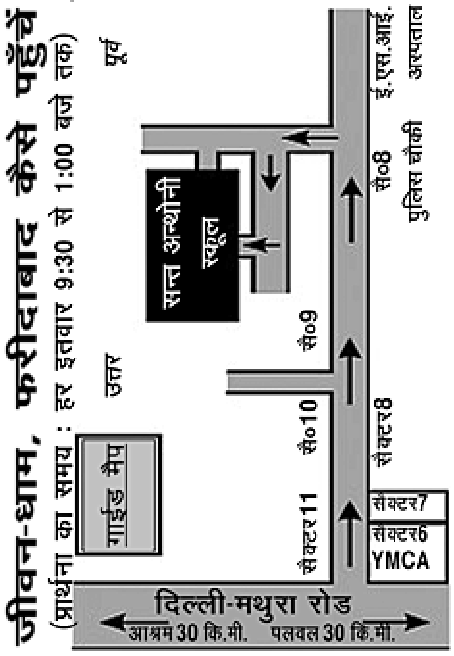

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सति) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

ङ) सही उत्तरों से मिलाने के लिए अपने उत्तरों की एक प्रति अपने पास भी रखें।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित..........हैं ?
क्या आप दु:खी..........हैं ?
क्या आप रोगी..........हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति..........है ?

आपको सान्त्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्थोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रात: 9:30 बजे से 1:00 बजे तक 'जीवन-धाम' फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर प्रभु येशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।

"अपने हृदयों का खतना करो और हठधर्मी मत बने रहो; क्योंकि तुम्हारा प्रभु ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर तथा प्रभुओं का प्रभु है। वह महान्, शक्तिशाली तथा भीषण ईश्वर है। वह पक्षपात नहीं करता और घूस नहीं लेता।"(विधि-विवरण 10:16-17)

Edited & Published by JEEVAN DHAM, 696/Sec-22, Faridabad. Printed at Sabina Printing Press, 387/24, Faridabad, Haryana.